तिथि—10 अक्टूबर 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०६, वर्ष-१२
आश्विन, विक्रमी २०७५ (अक्टूबर 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ —ऋ०। १। २। ७। ४

व्याख्यान—हे जीवो! (विष्णोः०) व्यापकेश्वर के किये दिव्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय आदि कर्मों को तुम देखो। (प्रश्न)—किस हेतु से हम लोग जानें कि ये व्यापक विष्णु के कर्म हैं? (उत्तर)—(यतो व्रतानि पस्पशे) जिससे हम लोग ब्रह्मचर्यादि व्रत तथा सत्यभाषणादि व्रत, और ईश्वर के नियमों का अनुष्ठान करने को जीव सशरीरधारी होके समर्थ हुए हैं। यह काम उसी के सामर्थ्य से है। क्योंकि (इन्द्रस्य युज्यः सखा) इन्द्रियों के साथ वर्त्तमान कर्मों का कर्त्ता, भोक्ता जो जीव इसका वही एक योग्य मित्र है, अन्य कोई नहीं। क्योंकि ईश्वर जीव का अन्तर्यामी है, उससे परे जीव का हितकारी कोई और नहीं हो सकता। इससे परमात्मा से सदा मित्रता रखनी चाहिये।।

सम्पादकीय

अब भी न सुधरे तो.....?

पिछले दो दिनों से सामाजिक प्रचार माध्यम (सोसियल मीडिया) पर विडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक **'लव जेहाद'** के सरगना एस. यू. खान एवं जैकी खान नामक ईस्लाम के अनुयायियों ने आर्य समाज मन्दिर का नाम देकर एक कमरे में विवाह करवाने का व्यापार चलाया हुआ है। पहली दृष्टि में देखने पर स्वाभाविक रूप से क्रोध आता है कि आखिर किन-किन रूपों में हमें मुस्लिम लोगों की धृष्टता देखनी-सुननी और सहन करनी पड़ेगी? कुछ ही दिन बीते हैं कि एक **'आशु महाराज'** दुष्कर्म के आरोप में पकड़ा गया, यह ठग हिन्दुधर्मी बाबा बनकर करोड़ों में खेलने लगा था। जबकि इस्लाम में रहते हुए यह एक कंगाल था। महिलाओं की शिकायत पर इसे गिरफ्तार किया गया।

पाठकगणो! चिन्तनीय यह है कि यह सब करने की हिम्मत इन लोगों की कैसे हुई? क्यों हुई? जब हमने इस पर विचार किया तब पता लगा कि इनको राह हमारे लोगों ने ही दिखाई है। धर्म को, अध्यात्म को प्रथम हमारे लोगों ने विकृत किया। हम स्वार्थवश सहते रहे, फिर किसी अयोग्य षडयन्त्रकारी ने थोड़ा इस स्थिति को और व्यापारिक सोच के साथ और भी बिगाड़ा और हम थोड़ा और सहनशील हो गये। परिणामस्वरूप आज के आधुनिक आभासी संचार माध्यमों (सोसियल मीडिया) से यह गृहछिद्र बाहर वालों को दिखने लगे, जिससे उनका साहस बढ़ा और वे घर में घुस ही नहीं गये, अपितु घरौंदे बनाकर भी जम गये।

इन उपरोक्त घटनाक्रमों को यदि हम सभी पहले, द्वितीय घटना के बारे में विचार करें कि कंगाल व्यक्ति बाबा बनकर निरीह हिन्दु जनता को ठग रहा था तो किसी भी आर्यसमाजी की एक ही प्रतिक्रिया सुनने को मिलती है 'अरे! इन हिन्दुओं को कोई भी ठग सकता है, ये भाग्यवादी हैं, अन्धविश्वासी हैं, बाबाओं के पीछे पागल हुए घूमते हैं, इनको बचाना असम्भव है'। अर्थात् सारा दोष दूसरों पर मढ़ देंगे। किन्तु यदि हम पहली घटना पर विचार करें! तब क्या उत्तर होगा? तब क्या समझाओगे? यही कि आर्यसमाज के सहारे यदि किसी की रोजी-रोटी चल रही है, तो क्या बुरा है? यह कि चलो एक-दो घटनाएं तो होती रहती हैं... आदि-आदि कहकर हम अपने अन्दर की कमियों को छुपाने का प्रयास करते हैं।

किन्तु नहीं! सत्य यह है कि आर्यसमाज की स्थापना जिस उद्देश्य के लिए हुई थी आज वे उद्देश्य आर्य समाजी कहलाने वाले ही भूल गये। उद्देश्य विहिन लोग आर्य समाजों के, प्रान्तीय सभाओं के, शिरोमणि संस्थाओं के शीर्ष पर बैठकर व्यापारिक हानि-लाभ की तराजू पर तौलकर योजनाएं बनाते हैं। कुछ थोड़े भावनाशील-सत्यकारी यदि हैं तो वे उपेक्षा के शिकार हैं या

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

बाहर बिठा दिये गये हैं। पद पर जाने के लिए प्रधान या मंत्री बनने के लिए धनी होना, दबंग होना, राजनैतिक तिकड़मबाज होना ही सबसे बड़ी योग्यता बन चुकी है। व्याख्यानों में जिन सिद्धान्तों की धज्जियाँ आर्य विद्वान् उड़ाते हैं उन्हीं जड़ पूजाआदि के कार्य राजनैतिक पद आसानी से करवा देते हैं। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के एक नेता गणेश परिक्रमा कर रहे हैं तो बिहार प्रतिनिधि सभा के पूर्व नेता गणेशदान और कभी कोई संन्यासी रोहिंग्या घुसपैठियों की ही पैरवी करने लग जाता है। यदि कोई महाशय दानी हो तो उसका तो सब कुछ माफ? कई प्रान्तों में 'आर्यसमाज' एक विवाह स्थल बनकर रह गये हैं। कुछ व्यापारिक लोगों ने स्वयं के धन से भवन बनवाये हुए हैं, जहाँ वे मात्र भगोड़ों के विवाह करवाते हैं।

आखिर मजहबी (मुसलमान) का यह साहस हुआ कैसे? कि वह 'आर्यसमाज मन्दिर' नाम रखकर विवाह का धन्धा करे। स्वाभाविक सी बात है उसने ऐसा धन्धा करते पहले हमारे ही किसी धन्धेबाज को देखा होगा, पूछा होगा और फिर फायदा देखकर स्वयं के कमरे में ही मन्दिर बना लिया और व्यापार शुरु। किन्तु यदि ऋषि दयानन्द के उद्देश्य सम्मुख रहते, प्रथम पीढ़ी के बलिदान, तप, त्याग और सम्पत्तिदान लक्ष्य स्मरण रखते, संस्कार विधि में लिखित सबसे बड़े संस्कार को यदि हमारे ही लोग व्यापार न बना लेते तो ऐसे दुर्दिन कभी देखने न पड़ते।

अतः सावधान आर्यों! अभी तो आर्य समाज मन्दिर के नाम पर निकाह की खबर आयी है, कहीं ऐसा न हो कि संध्या के समय पर किसी आर्य समाज मन्दिर से अजान सुनाई देने लगे? समय कम है, अब भी न सुधरे तो...? लिखना आवश्यक नहीं।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा, दिल्ली प्रान्त की गतिविधियाँ

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा दिल्ली द्वारा एशियार्ड में सिल्वर पदक विजेता श्री अमन सैनी जी का सम्मान किया गया। राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा संम्पूर्ण दिल्ली में युवा आर्यों को योग्य आर्य क्षत्रिय बनाने के लिए सम्पूर्ण भारत में कार्य करती है। सभा का उद्देश्य समाज में फैली बुराईयों के विरुद्ध कार्य करना है।

सभा ने दिल्ली में घिटोरनी, द्वारिका, नांगलोई और गुरुकुल टटेसर में एक, दो व त्रिदिवसीय क्षत्रिय सभा के कैम्प का आयोजन किया। जिसमें सैकड़ों युवक क्षत्रिय सभा की ट्रेनिंग कर चुके हैं। भविष्य में भी क्षत्रिय सभा आर्यों के लिए बौद्धिक शारीरिक योग्यता बढ़ाने हेतु कैम्पों का आयोजन करती रहेगी।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारक विभिन्न विद्यालयों में

क्रान्तिकारी भगतसिंह की वैचारिक पृष्ठभूमि

-आचार्य सतीश

जो भी व्यक्ति महानता को प्राप्त हो जाता है उसकी विचारधारा को अपने से जोड़ने का प्रयास भिन्न-भिन्न समूहों द्वारा किया जाता है। ऐसे व्यक्ति को ये समूह अपनी धरोहर सिद्ध करने के लिए प्रयास करते हैं, ऐसे प्रमाण ढूढ़ते हैं और उनके द्वारा उसे स्थापित करने का प्रयास करते हैं। आइए अब इसी आधार पर अपने एक महान् स्वाधीनता सेनानी सरदार भगत सिंह का आकलन करते हैं।

सरदार भगत सिंह को दो समूह या विचारधाराएँ हैं जो उसे अपना सिद्ध करने का प्रयास कर रही हैं। एक लम्बे समय में साम्यवादियों द्वारा यह सिद्ध किया जाता रहा है कि भगत सिंह साम्यवादी थे। साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित होकर क्रान्तिकारी बने और राष्ट्र की स्वाधीनता में अपना योगदान दिया और स्वाधीनता के बाद से ही देश के प्रतिष्ठानों में साम्यवादियों का वर्चस्व होने के कारण से ही उन्होंने इसका व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया है। दूसरी ओर आर्य परम्परा के लोगों द्वारा भी धीरे-धीरे यह स्थापित करने का प्रयास किया गया कि भगतसिंह आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित था और उसके क्रान्तिकारी बनने में आर्य समाज के विचारों का बड़ा भारी योगदान था। दोनों ही पक्षों के अपने-अपने आधार हैं जो इस प्रकार हैं।

साम्यवादी विचारक कहते हैं कि भगत सिंह ने न केवल अपने लेखों के माध्यम से इस विचारधारा को प्रदर्शित किया है अपितु मार्क्स व लेलिन का गहन अध्ययन करके उन्होंने इसे प्रतिस्थापित भी किया है। दूसरी ओर आर्य विचारधारा वाले कहते हैं और ऐसा मानते भी हैं कि चूंकि भगत सिंह का परिवार, उसके दादा जी सरदार अर्जुन सिंह से लेकर आर्य विचारधारा में रहा है, परिवार का वातावरण आर्य विचारधारा का था। वे एक आर्य समाजी लाला लाजपतराय को अपना अग्रज मानते थे तो यह कहा जा सकता है कि भगत सिंह एक आर्य युवक था। आइए इन दोनों के दावे का स्वतन्त्र विश्लेषण करते हैं क्योंकि यदि किसी प्रभाव में विश्लेषण करेंगे तो यह भी सरदार भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारी के साथ न्याय नहीं होगा। भगत सिंह के विचारों का पता उनके द्वरा लिखित प्रपत्रों से ही चल सकता है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि भगत सिंह ने जेल में चार पुस्तकें लिखी, लेकिन वे चारों ही पुस्तकें बाहर आकर उस समय न छप पाने के कारण से लुप्त हो गई ऐसा अनुमान लोग लगाते हैं। उसके अलावा उनके द्वारा एक लेख अपनी मृत्यु के कुछ पहले **मैं नास्तिक क्यूँ** के नाम से लिखा। वह उपलब्ध है तथा इसके अलावा एक अन्य क्रान्तिकारी लाला रामशरण दास की काव्य पुस्तिका (स्वप्न लोक) की प्रस्तावना जो उनके द्वारा लिखी गई वह उपलब्ध है। उनके द्वारा लिखे गए पत्र व न्यायालय में दिये गए वक्तव्य उपलब्ध हैं।

साम्यवादी भगत सिंह के जिस लेख द्वारा उसे नास्तिक सिद्ध करते है और मार्क्सवाद का अनुयायी मानते हैं उसका आधार वे उनके लेख **मैं नास्तिक क्यूँ** को बनाते हैं तथा यही भगत सिंह का सबसे बड़ा दस्तावेज है जो लगभग 20 पृष्ठों का एक लेख है।

इस लेख में भगत सिंह जो लिखा है पहले उसकी पृष्ठ भूमि जान लें! सरदार भगत सिंह का परिवार ऋषि दयानन्द की विचारधारा को धारण कर उस पर चलने वाला था। उनके दादा जी आर्य समाज से जुड़े और परिवार में राष्ट्रभक्ति, संघर्ष व सत्यपथ पर चलने की परम्परा चल पड़ी जो परिवार के सभी सदस्यो के किसी न किसी रूप में स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ने के रूप में परिणीत हुई। परिवार की उसी परम्परा के प्रभाव में भगत सिंह भी क्रान्तिकारी युवाओं से जुड़ गए और अपने अध्ययन को पूरा नहीं कर पाए। भगत सिंह का जन्म 1907 में हुआ और 1917 में रूसी क्रान्ति के बाद दुनिया भर में एक नए आन्दोलन ने जन्म लिया जिससे अनेकों युवक प्रभावित हुए। किशोरावस्था नए-नए विचारों की ओर अत्याधिक आकर्षित होती है। इस बात से कोई भी मना नहीं कर सकता कि रूसी क्रान्ति के बाद अनेक लोगों को संसार भर की समस्याओं का समाधान उसी में लगने लगा था, हाँलाकि जो लगभग 70 वर्षों में ही मिथ्या सिद्ध हुआ। भगत सिंह जैसे युवक जहाँ आर्य विचारों को परिवार से प्राप्त किए हुए थे लेकिन गुरूदत्त विद्यार्थी, लालालाजपत राय, रामप्रसाद बिस्मिल आदि की तरह स्वाध्याय से विद्या प्राप्त नहीं कर पाये थे। क्योंकि वे बहुत छोटी आयु में ही क्रान्तिकारियों से जुड़ गये थे। हाँ जेल में उन्हें साम्यवादी साहित्य उपलब्ध हुआ, उसका उन्होंने स्वाध्याय भी किया, लेकिन इससे ईतर आर्य साहित्य या आध्यात्मिक साहित्य का स्वाध्याय उतना न हो सका। इसका प्रमाण उनके लेख से ही सिद्ध होता है जिसकी चर्चा आगे रहेगी। इन्हीं परिस्थियों व पृष्ठभूमि में भगत सिंह द्वारा वह लेख लिखा गया और उसमें यह स्वीकारोक्ति की गई की हाँ मैं नास्तिक हूँ। मैं ईश्वर को नही मानता। लेकिन किसी के नास्तिक या आस्तिक होने के पीछे कारण क्या है, जब तक उनको सही से नहीं जाना जाता है तब तक उसके बारे में निर्णय नहीं किया जा सकता है। व्यक्ति अपने बारे में जो घोषणा करता है वह अपने ज्ञान के आधार पर करता है। लेकिन उसकी घोषणा की सत्यता इस बात पर निर्भर करती है कि उसका ज्ञान कितना तथ्यात्मक है। सरदार भगत सिंह ने अपने नास्तिक होने के मुख्य रूप से तीन कारण दिए हैं।

संसार भर के नास्तिक ईश्वर की कल्पना दो कारणों से मानते हैं **प्रथम**- यह कि कुछ लोगों ने कमजोर लोगों के शोषण के लिए किसी ऐसी सत्ता की कल्पना की जिससे भय दिखाकर वे उसका शोषण कर सकें और अपने हितों की पूर्ति कर सकें। **दूसरा** कारण मानते हैं कि- व्यक्ति जब कमजोर या दुखी होता है तो वह किसी ऐसी सत्ता से सहारा चाहता है जिससे वह अपने को सन्तुष्ट कर सके। दुखियों के सहारे के रूप में ईश्वर की कल्पना की गई है। जहाँ साम्यवादी विचारधारा के लोग पहले कारण से ईश्वर की उत्पत्ति मानते हैं, वहीं भगत सिंह ने साम्यवादियों की उस बात को नकारते हुए दूसरे कारण को ईश्वर के अविर्भाव का कारण माना है। ईश्वर की उत्पत्ति कमजोर लोगों की कल्पना है और वो चूंकि अपने आपको ईश्वर की सत्ता को स्वीकार कर कमजोर सिद्ध नहीं करना चाहते थे इसीलिए उन्होंने ईश्वर को मानने से स्पष्ट मना किया। उन्होंने लेख के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक कई बार इस बात को कहा कि ऐसे नहीं कि मेरा कोई घमण्ड है और मैं घमण्ड के कारण ईश्वर को नहीं मान रहा हूँ। अपितु लेख के अन्त में लिखते हैं कि मैं कमजोर नहीं हूँ और अपने जीवन के अन्त समय में यदि ईश्वर को मान लेता हूँ तो यह मेरी कमजोरी को दर्शाएगा जो कि मैं नहीं हूँ। फिर भी यदि इस आधार पर मुझे कोई घमण्डी कहना चाहे तो मैं उसके लिए भी तैयार हूँ। यहाँ यह विचारणीय है कि भगत सिंह का यह विचार स्थापित मान्यताओं के आधार पर बना है। इतना समय उस कम आयु में उनको नहीं मिल पाया था कि वे इस पर दर्शन शैली में चिन्तन कर निर्णय कर सकते।

इसके अलावा दो कारण और बताए हैं भगत सिंह ने अपने उस लेख में ईश्वर की सत्ता को नकारने के। उन कारणों पर चर्चा हम अपने अगले लेख में करेंगे।

-शेष अगले अंक में...

यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है। परमेश्वर ने मनुष्यमात्र के कल्याणार्थ सत्यविद्याएं वेदों में बताई हैं। अपने प्रथम नियम में ही आर्य समाज यह उद्घोषित कर रहा है कि हम सत्यविद्या (विज्ञान=वेद) का ग्रहण और अविद्या (वेदविरुद्ध=विज्ञान विरुद्ध) का त्याग करते हैं। प्राचीनकाल से ही ऋषियों ने अवैज्ञानिक बातों को पाखण्ड व अनार्ष मानकर त्यागा था और विज्ञानानुकूल बातों को धारण कर परम्पराओं का प्रारम्भ किया था। अत: विचारणीय है कि वैदिक परम्पराओं, अग्निहोत्र, यज्ञोपवीत, 16 संस्कार, चौटि (शिखा), मेखला (तगड़ी) आदि क्या वास्तव में वैज्ञानिक विधान हैं और उनसे क्या-क्या लाभ हमें होते हैं?

विद्य वै ते जामान्य जानं यतो जामान्य जायसे।
कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे।।-अथर्ववेद

है (जामन्य) स्त्री से उप्पन्न होने वाले (क्षमयरोग) (यत: जायसे) जहां से तू उत्पन्न होता है (ते जानं विद्य वै) तेरा जन्म हम जानते है। (त्वं, तत्र, कथं, हन:) तू वहां किस प्रकार मारा जाता है (यस्य, गृहे, हवि, कृण्म:) जिसके घर में हम हवन करते है।

अर्थात्- हवन से रोगोत्पादक किटानु-विषाणु नष्ट हो जाते हैं। शतपथ ब्राह्मण में इसीलिए (अग्नि: रक्षसाम् अपहन्ता) अग्नि को राक्षसों=रोगाणुओं का नाशक कहा गया है। इसी कारण वैदिक धर्म में हवन का बहुत महत्व है। हवन साम्रगी में मुख्यत: चार प्राकार के पदार्थ होते हैं- रोगाणु नाशक, मीठे, सुगन्धित, पुष्टिकारक। लकड़िया कम धुआं देने वाली जैसे चन्दन, आम, पीपल, पलास आदि की एवं घी, जो एक बलदायक पदार्थ है। हवन की वैज्ञानिकता में प्रथम तर्क तो यह दिया जाता है कि जिस प्रकार प्लास्टिक जैसे हानिकारक पदार्थ जलाए जाते हैं और वह दुर्गन्ध एवं बीमारी पैदा करते हैं जैसे सिर दर्द, अस्थमा आदि। ठीक उसी प्रकार यह संभव है कि जब उत्तम-उत्तम पदार्थ अग्नि में आहुत किए जायेंगे तो निश्चित रूप से वह स्वास्थ्य और सुगन्ध ही प्रदान करेंगे। कुछ मूर्ख लोग कहते हैं कि हवन में घी को जलाकर नष्ट नहीं करना चाहिए वरन् उन्हें खाना चाहिए। खाना तो अवश्य चाहिए किन्तु हवन में डालने से भी घी नष्ट नहीं होता क्योंकि विज्ञान कहता है कि किसी भी तत्व को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है, केवल उसका रूप परिवर्तन हो जाता है। उसी प्रकार नष्ट न होकर सूक्ष्म (परमाणु) रूप हो जाता है। जिस प्रकार मिर्च खाने पर केवल खाने वाले को ही दुख देती है जबकि यदि उन्हें अग्नि में डाला जाए और हवन में डालने से अनेकों को लाभान्वित करता है। अग्नि से उसकी प्रबलता कई गुना बढ़ जाती है। इसी तरह टी.बी. (क्षयरोग, अस्थमा), बच्चे न होना (बाझंपन, नपुसंकता) आदि रोग वहां नहीं आते जहां नित्य हवन होता है।

टौटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गई अपनी रिसर्च में पाया कि यदि आधे घन्टे हवन में बैठा जाए अथवा हवन के धुएं से शरीर का सम्पर्क हो तो टायफाइड जैसे खतरनाक रोग फैलाने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं।

फ्रांस के ट्रैले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर शोध में पाया कि जब आम की लकड़ी जलती है तो फार्मिक एल्डिहाइड गैस पैदा होती है, जो खतरनाक बैक्टिरिया और जीवाणुओं को मारती है। गुड़ जलाने पर भी यह गैस बनती है, जो वातावरण की शुद्धि करती है।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान द्वारा किए गए शोध में पाया गया कि हवन से वातावरण शुद्ध होता है और हानिकारक जीवाणु 94 प्रतिशत तक नष्ट हो जाते हैं। हवन के औषधीय धुएँ का वातावरण पर असर कई दिन तक बना रहता है। न केवल मनुष्य अपितु खेती के लिए भी हवन और उसकी राख के अनेक फायदे हैं। हवन की वैज्ञानिकता पर एक शोध पत्र व खोज रिसर्च जर्नल ऑफ एथनाकफार्माकॉलोजि में 2007 में छप चुका है। हवन की राख के फायदों को देखते हुए कई देशों में उसकी गोली व कैप्सुल बनाकर खाए जा रहे हैं, यही नहीं नाभिकीय विकिरणों को भी हवन का धुआँ बेअसर करता है। 1984 में भोपाल में (मिथाइल-आइसोसाइनाइट) गैस के रिसाव में भी बहुत लोग मारे गये किन्तु रिसाव वाली जगह के पास दो परिवार जहाँ रोजाना हवन होता था सुरक्षित रहे क्योंकि विशेषज्ञों के अनुसार हवन की गैस ने प्रतिरोधक का काम किया था।

ओहिजनवर्ग यूनिवर्सिटी (म्यूनिख) के शोध अनुसन्धान में लगे अर्नाल्ड रदरगेड ने कहा कि हवन से इतने रोगों का नाश किया जा सकता है कि इस विधि को यज्ञोपैथी कहा जा सकता है। जहाँ किसी औषधी का प्रभाव नहीं होता वहाँ औषधियों की वाष्पीभूत ऊर्जा रोग विकारों का शमन करती है। अनेक लोगों की मान्यता है कि हवन से CO2 उत्पन्न होती है जिससे प्रदुषण फैलता है, क्योंकि आग जलने के लिए आक्सीजन की जरूरत होती है अत: आग जलने से स्वभाविक रूप से आक्सीजन घटेगी और कार्बनडाईआक्साइड बढ़ेगी तथा प्रदुषण होगा। किन्तु यदि ऐसा होता तो हवन में बैठने वालों का दम घुटने लगता इसके विपरीत हवन की सुगन्ध से लोग स्फूर्ति का अनुभव करते हैं। विभिन्न कारणों से आज प्रदूषण अधिक होने से ओजोन परत में छेद हो चुका है जिससे त्वचा कैंसर जैसे रोग के खतरों की आशंका है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. सत्यप्रकाश कहते हैं कि हवन से उपयोगी ओजोन व फार्मोल्डिहाइड गैसें भी उत्पन्न होती है।

हवन से प्रदुषण वाली बात को इस तरह से समझा जा सकता है। जैसे हम पानी में कोई औषधी उबालते हैं, काढ़ा बनाते हैं, तो पानी का मूल गुण, गन्धरहित, स्वादरहित परिवर्तित तो हो जाता है किन्तु वह परिवर्तन सकारात्मक है जिससे पानी दूषित नहीं होता अपितु उसकी गुणकारी शक्ति और बढ़ जाती है। इसी तरह हवन करने में आग जलने पर थोड़ी आक्सीजन नष्ट होती है, ठीक है, किन्तु इसके साथ-साथ पानी की तरह वायु की गुण शक्ति भी बढ़ती है। अत: हवन से प्रदूषण वाली बात केवल कुतर्क है। हवन के विज्ञान वाली बात को आधुनिक विशेषज्ञों ने अब स्वीकार किया है जिसे वेदों में लाखों-करोड़ों वर्ष पूर्व बताया जा चुका है-

स्वाहा यज्ञं मनस: स्वाहोरोरन्तरिक्षात् स्वाहा।
द्यावा पृथ्वीभ्यामꣳ स्वाहा वातादारभे स्वाहा।। -यजु॰

मन की मैल स्वार्थ ही तो है। यज्ञ से हमारे मन में केवल अपने-आप खाने की वृत्ति का अन्त हो जाता है। यज्ञ में डाले गए औषधद्रव्य व धृत छोटे-छोटे कणों में विभक्त होकर सारे अन्तरिक्ष में फैल जाते हैं। इससे सारी वायु शुद्ध होती है और द्युलोक से लेकर पृथ्वी तक रहने वाले सभी प्राणियों को नीरोगता का लाभ होता है, दुख की बात है कि अनुसंधान के अभाव में हम हवन के लाभों से अनभिज्ञ है जिस कारण से हमारे पूर्वजों की वैज्ञानिक परम्पराएं हमसे छूटती जा रही हैं। आज विदेशी इनपर शोध कर रहे हैं और लाभ उठा रहे हैं किन्तु हमारे देश में लाभ लेना तो दूर उल्टा श्रेष्ठ परम्पराओं के जनक वेद और महान् पूर्वजों को ही विभिन्न आधारों से अपमानित और दोषी सिद्ध किया जाता है। आशा है कि सुधि पाठकगण थोड़े से विश्लेषण से ही अधिक ग्रहण करेंगे। सुख, स्वास्थ्य और वैभव देने वाली श्रेष्ठ परम्परा को अपनाएं। हवन करें, करवावें।।

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

प्रश्न-कैसे मनुष्य पढ़ाने और उपदेश करनेवाले न होने चाहिएँ?

मूर्ख के लक्षण

उत्तर- अश्रुतश्च समुन्नद्धो दरिद्रश्च महामनाः।
अर्थांश्चाकर्मणा प्रेप्सुर्मूढ इत्युच्यते बुधैः॥ १॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ३३ । श्लोक ३०]

जो किसी विद्या को न पढ़ और किसी विद्वान् का उपदेश न सुनकर बड़ा घमण्डी, दरिद्र होकर [धन-सम्बन्धी] बड़े-बड़े कामों की इच्छावाला, और विना [कर्म] किये बड़े-बड़े फलों की इच्छा करनेहारा है॥१॥

दृष्टान्त -जैसे एक कोई दरिद्र शेखचिल्ली नामक किसी ग्राम में था। वहाँ किसी नगर का बनिया दस रुपये उधार लेके घी लेने आया था। वह घी लेकर घड़े में भरकर किसी मजूर के खोज में था। वहाँ शेखचिल्ली आ निकला। उससे पूछा कि इस घड़े को तीन कोस पर ले-जाने की क्या मजूरी लेगा? उसने कहा कि-'आठ आने'। बनिये ने कहा कि चार आने लेना हो तो ले। उसने कहा-अच्छा। शेखचिल्ली घड़ा उठा आगे चला। और बनिया पीछे-पीछे चलता हुआ मन में मनोरथ करने लगा कि दस रुपयों के घी के ग्यारह रुपये आवेंगे। दश रुपया सेठ को दूँगा, और एक रुपया घर की पूंजी रहेगी। वैसे ही दस फेरे में दस रुपये हो जाएँगे। इसी प्रकार दस से सौ, सौ से सहस्र, सहस्र से लक्ष, लक्ष से करोड़। फिर करोड़ से सब जगह कोठियाँ करूँगा, और सब राजा लोग मेरे कर्ज़दार हो जाएँगे। इत्यादि बड़े-बड़े मनोरथ करने लगा। उधर शेखचिल्ली ने विचारा कि चार आने की रुई से सूत कात कर बेचूगाँ। आठ आने मिलेगें। फिर आठ आने से एक रुपया हो जायेगा। फिर वैसे ही एक से दो रुपये होंगे। उससे एक बकरी लूँगा। जब उसके बच्चे-बच्चे होंगे तब उनको बेच एक गाय लूँगा। उसके कच्चे-बच्चे बेच भैंस लूँगा। उनके कच्चे-बच्चे बेच एक घोड़ी लूँगा। उसके कच्चे-बच्चे बेच एक हथिनी लूँगा। और उसके कच्चे-बच्चे बेच दो बीबियाँ ब्याहूँगा। एक का नाम प्यारी और दूसरी का नाम बेप्यारी रक्खूँगा। जब प्यारी के लड़के गोद में बैठने आवेंगे तब कहूँगा बच्चो! आओ बैठो। जब बेप्यारी के लड़के आकर कहेंगे कि हम भी बैठें, तब कहूँगा नहीं-नहीं, ऐसा कहकर शिर हिला दिया। घड़ा गिर पड़ा, फूट गया, और घी भूमि पर फैलके धूली में गया। बनिया रोने लगा और शेखचिल्ली भी रोने लगा। बनिये ने शेखचिल्ली को धमकाया कि घी क्यों गिरा दिया, और रोता क्यों है ? तेरा क्या नुक्सान हुआ? **(शेखचिल्ली)** तेरा क्या बिगड़ हुआ? तू क्यों रोता है ? **(बनिया)** मैंने दश रुपये उधार लेकर प्रथम ही घी खरीदा था उसपर बड़े-बड़े लाभ का विचार किया था, वह मेरा सब बिगड़ गया मैं क्यों न रोऊँ? **(शेखचिल्ली)** तेरी तो दश रुपये आदि की ही हानि हुई मेरा तो घर ही बना-बनाया बिगड़ गया। मैं क्यों न रोऊँ ? **(बनिया)** क्या तेरे रोने से मेरा घी आ जाएगा? **(शेखचिल्ली)** अच्छा तो तेरे रोने से मेरा घर भी न बन जाएगा। तू बड़ा मूर्ख है। **(बनिया)** तू मूर्ख, तेरा बाप। दोनों आपस में एक-दूसरे को मारने लगे। फिर मारपीट कर शेखचिल्ली अपने घर की ओर भाग गया और बनिये ने धूली में मिले हुए घी को ठीकरे में उठाकर अपने घर की राह ली। ऐसे ही स्वसामर्थ्य के बिना अशक्य मनोरथ किया करना मूर्खों का काम है। और जो विना परिश्रम के पदार्थों की प्राप्ति में उत्साही होता है, उसी मनुष्य को विद्वान् लोग **'मूर्ख'** कहते हैं।

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते ।
अविश्वस्ते विश्वासिति मूढचेता नराधमः ॥२॥

(महा० उ० प० ॥ अ० ३३। श्लोक ३६)

जो बिना बुलाये जहाँ-तहाँ सभादि स्थानों में प्रवेश कर सत्कार और उच्चासन को चाह, वा ऐसी रीति से बैठे कि सब सत्पुरुषों को उसका आचरण अप्रिय विदित हो, बिना पूछे बहुत अण्ड-बण्ड बके, अविश्वासियों में विश्वासी होकर सुखों की हानि कर लेवे, वही मनुष्य **'मूढ़बुद्धि'** और मनुष्यों में नीच कहाता है ॥२॥

जहाँ ऐसे-ऐसे मूढ़ मनुष्य पठन-पाठन आदि व्यवहारों को करनेहारे होते हैं, वहाँ सुखों का तो दर्शन कहाँ, किन्तु दुःखों की भरमार तो हुआ ही करती है। इसलिए बुद्धिमान् लोग ऐसे-ऐसे मूढ़ों का संग, वा इनके साथ पठन-पाठनक्रिया को व्यर्थ समझकर पूर्वोक्त धार्मिक विद्वानों का प्रसंग, और उन ही से विद्या का अभ्यास, किया करें और सुशील, बुद्धिमान् विद्यार्थियों ही को पढ़ाया करें।

ये विद्वान् और मूर्ख के लक्षण-विधायक श्लोक [महाभारत]

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका

पर जाएं।

26 सितम्बर-24 अक्टूबर 2018 **आश्विन** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		रेवती कृष्ण प्रतिपदा 26 सितम्बर	अश्विनी कृष्ण द्वितीया 27 सितम्बर	भरणी कृष्ण तृतीया 28 सितम्बर	कृतिका कृष्ण चतुर्थी 29 सितम्बर	रोहिणी कृष्ण पंचमी/षष्ठी 30 सितम्बर
मृगशिरा कृष्ण सप्तमी 1 अक्टूबर	आर्द्रा कृष्ण अष्टमी 2 अक्टूबर	पुनर्वसु कृष्ण नवमी 3 अक्टूबर	पुष्य कृष्ण दशमी 4 अक्टूबर	आश्लेषा कृष्ण एकादशी 5 अक्टूबर	मघा कृष्ण द्वादशी 6 अक्टूबर	पू० फाल्गुनी कृष्ण त्रयोदशी 7 अक्टूबर
उ० फाल्गुनी कृष्ण चतुर्दशी 8 अक्टूबर	हस्त कृष्ण अमावस्या 9 अक्टूबर	चित्रा शुक्ल प्रतिपदा/द्वितीया 10 अक्टूबर	स्वाती शुक्ल तृतीया 11 अक्टूबर	विशाखा शुक्ल चतुर्थी 12 अक्टूबर	अनुराधा शुक्ल पंचमी 13 अक्टूबर	ज्येष्ठा शुक्ल पंचमी 14 अक्टूबर
मूल शुक्ल षष्ठी 15 अक्टूबर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल सप्तमी 16 अक्टूबर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल अष्टमी 17 अक्टूबर	श्रवण शुक्ल नवमी 18 अक्टूबर	धनिष्ठा शुक्ल दशमी 19 अक्टूबर	शतभिषा शुक्ल एकादशी 20 अक्टूबर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 21 अक्टूबर
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल त्रयोदशी 22 अक्टूबर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल चतुर्दशी 23 अक्टूबर	रेवती शुक्ल पूर्णिमा 24 अक्टूबर		शुक्ल विजय दिवस आश्विन शुक्ल दशमी 19 अक्टूबर		

25 अक्टूबर-23 नवम्बर 2018 **कार्तिक** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
			अश्विनी कृष्ण प्रतिपदा 25 अक्टूबर	भरणी कृष्ण द्वितीया 26 अक्टूबर	कृतिका कृष्ण तृतीया 27 अक्टूबर	रोहिणी कृष्ण चतुर्थी 28 अक्टूबर
आर्द्रा कृष्ण पंचमी 29 अक्टूबर	पुनर्वसु कृष्ण षष्ठी 30 अक्टूबर	पुष्य कृष्ण सप्तमी 31 अक्टूबर	आश्लेषा कृष्ण अष्टमी 1 नवम्बर	मघा कृष्ण नवमी/दशमी 2 नवम्बर	पू० फाल्गुनी कृष्ण एकादशी 3 नवम्बर	उ० फाल्गुनी कृष्ण द्वादशी 4 नवम्बर
हस्त कृष्ण त्रयोदशी 5 नवम्बर	चित्रा कृष्ण चतुर्दशी 6 नवम्बर	स्वाती कृष्ण अमावस्या 7 नवम्बर	विशाखा शुक्ल प्रतिपदा 8 नवम्बर	अनुराधा शुक्ल द्वितीया 9 नवम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल तृतीया 10 नवम्बर	मूल शुक्ल चतुर्थी 11 नवम्बर
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पंचमी 12 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 13 नवम्बर	श्रवण शुक्ल सप्तमी 14 नवम्बर	श्रवण शुक्ल सप्तमी 15 नवम्बर	धनिष्ठा शुक्ल अष्टमी 16 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल नवमी 17 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल दशमी 18 नवम्बर
उत्तराभाद्रपदा शुक्ल एकादशी 19 नवम्बर	रेवती शुक्ल द्वादशी 20 नवम्बर	अश्विनी शुक्ल त्रयोदशी 21 नवम्बर	भरणी शुक्ल चतुर्दशी 22 नवम्बर	कृतिका शुक्ल पूर्णिमा 23 नवम्बर		

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

Swamiji deeply deplored the want of suitable institutions for teaching Sanskrit. One day, he remarked to a disciple of his, Baldev Prasad by name, "Baldev, the sons of the rich are attracted by English and Persian, and the destitute remain to receive instruction in Snskrit. How can society go ahead?" Among other things, one of Swamiji's objects in visiting calcutta was to found there a pathashala on true Vedic lines. But the idea could not be materialized for want of practical support.

It would not be out of place to put down the impressions of a Bengali youth, Manmatha Nath Chowdhri, B.A., who was so much struck by Swamiji.s learned discourses, and purity of character that he began to live with him. He wrote all this in 1900 in a latter to Devendra Babu, the well-known biographer of Swamiji, "Since I had occasions to watch the activities of Swamiji, at clock quarters, I know certain thing which others could not. Swamiji used to get up at 3 o' close in the morning and would start Yoga which would ordinarily continue for three hours. from 9 to 12 he would receive visitors whose queries he kept on answering. At 12 he would take his midday meals, and then from 1P.M. to 9 P.M. he would keep discussing religious topics with people who were constantly coming to him. Every moment I felt that he was born with a mission."

"I have seldom come across a man with greater independence of character. If anybody really loved democracy, it was Swaiji. Many rajas used to call on him and perhaps expected differential treatment, but he treated all alike. He was a model of selfless patriotism and loftiness of character."From Calcutta, Swamiji proceeded to Hoogly where he delivered several lectures. Here he had a discussion with Pundit Tara Charan whom he had silenced in Kashi Shastrartha at the very outset. He fared no better now, and finding himself hard pressed exclaimed desperately, "All worship is absurd." Swamiji asked Pundit Tara Charan in private why he advocated idol worship when he did not believe in it. He said in plain words,"I quite agree with you that idol worship is not warranted by the Vedas nor do I believe in it. But if I say that openly, my livelihood will be jeopardized. Maharaj sahib will sack me out, the day I will reveal what I have in my heart."

Leaving Hoogly, Swamiji went to Bhagalpur where he stayed for a month and then left for Patna. From Patna he proceeded to Chhapra. The orthodox section pf Chhapra approached one Pandit Jagannath to hold a discussion with Swamiji. He declined, for in case he saw the face of Dayanand, the nastika, he would have to pay for his guilt. Swamiji suggested a way out of the difficulty-a curtain might be hung between them. Pundit Jagannath had no course left but to take up the challenge. A screen was actually hung between them and the discussion began. Swamiji put him some questions in Sanskrit from the Smritis, but Pandit Jagannath broke down at the outset, so much so that he could not speak a sentence of correct Sanskrit, and refused to proceed with the Shastrartha. There after Swamiji visited Dumroan, Kashi, Kanpur, Lucknow, Farrukhabad, Aligarh, Mathura, Brindaban. His discourses at each place attracted large audiences and carried conviction to the minds of those present. When he proved to them the sublimity of the original Aryan Faith, and how degeneration had set in chiefly on account of the self seeking priesthood then every soul present there was filled with emotions.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

यह दो दिन का सत्र काफी प्रेरणादायक रहा है। अपने पूर्वज महात्माओं, प्रेरक जनों के विचार पता चले और अपने वेदों के बारे में कुछ प्रेरक सिद्धान्तों के बारे में जानकर दिल-दिमाग में एक नई रोशनी जाग्रत हुई। मैं अपने जीवन में एक अच्छा राष्ट्रवादी बनने के लिए प्रेरित हूँ और सभी बुराई जो पहले खान-पान के बारे में रही है उनको दूर करने का संकल्प लेता हूँ।

मैं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के द्वारा संचालित महान् व सदृढ़ राष्ट्र बनाने के लिए अपना यथायोग्य समय व आर्थिक सहयोग देना चाहुँगा।

नाम: राजेश कुमार, आयु: 32 वर्ष, योग्यता: बी.ए., पता: नरेला, दिल्ली

इस सत्र में आकर मैं स्वयं को धन्य मानता हूँ कि मैं इतने अच्छे, संस्कार, विचारवान, सत्यतापूर्ण, क्रान्तिकारी, सत्यमार्ग देने वाले, वास्तविकता से अवगत करवाने वाली संस्थान में आया। मैं इस संस्था/संस्थान का सदा आभारी रहूँगा! और आगे भी इस संस्थान से जुड़ा रहूँगा।

समय-समय पर मेरा यथायोग्य सहयोग रहेगा और मैं यथायोग्य समयानुसार इस संस्थान में अन्यों (लोगों) को भी जोड़ने का भरपूर सहयोग करूंगा।

नाम: अनिल आर्य, आयु: 41 वर्ष, योग्यता: एम.एस.सी., बी.ऐड.,एम.एस.डबल्यू., पता: नरेला, दिल्ली

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा था। मुझे आज तक इतनी खुशी नहीं हुई। जब मैंने आपका सत्र लिया जो मेरा मन बहुत संन्तुष्ट हुआ। मैं आगे भी आपके इस सत्र का हिस्सा बनना चाहूँगा। अगर मुझे सौभाग्य मिलेगा तो मैं अपने आप को बहुत भाग्यवान समझूंगा। आज से आपके साथ जुड़ा हूँ। आगे मैं अपने साथी को भी आर्यसमाज के साथ जोडूंगा। ईश्वर के बारे में हमें बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। आपका धन्यवाद!

मेरा सहयोग आपको हमेशा मिलेगा। कभी आप हमें याद करके देखना। देश के लिए हम दिन-रात एक कर देगें आर्यसमाज को फैलाने के लिए।

नाम: मोहित, आयु: 29 वर्ष, योग्यता: बी.ए., पता: झज्जर, हरियाणा

मेरा इस सत्र का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। अपने छोटे भाई की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस सत्र में आने के लिए प्रेरित किया। मैंने मोर माजरा गुरुकुल में पाँच वर्ष तक अध्ययन किया। जहाँ तक अनुभव की बात है तो मुझे लगता है कि उन पाँच वर्षो की बजाय दो दिन का सत्र मेरे लिए कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है ऐसा लग रहा है जैसे मन मस्तिष्क से वर्षो की जमी हुई धूल उतर गई हो। जीवन को एक लक्ष्य मिल गया है।

मैं तन-मन-धन से राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा को सहयोग करुंगी। अगर धन की आवश्यकता भी हुई तो मैं यथासंम्भव अपना पूरा सहयोग करुंगी।

नाम: मनीषा, योग्यता: शस्त्री, पता: करनाल, हरियाणा

मुझे दो दिनों में ईश्वर, धर्म के प्रति इतना अनुभव मिला है, जो मुझे 15 साल हो गये विद्यालय जाते जो मैं आज तक नहीं सीख पाया था। जो मुझे दो दिनों में मिला मैं बहुत ही आभारी हूँ। जो ऐसा सिखने को मिला, मुझे पता चला कि कैसे जीवन जिया जाता है और मैं प्रतिज्ञा करुंगा की आर्यसमाज जल्द से जल्द आगे बढ़े और देश फिर आर्यावर्त्त के नाम से जाना जाये। मैं आज से नेकी के रास्ते पर चलूंगा और अपने धर्म की रक्षा करुंगा। मेरे जीवन में जो भी तकलीफ आये लेकिन मैं अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटूंगा।

आर्य समाज से मुझे पता चला की किसी भी बुरी चीज को छोड देना चाहिए, बुरी चीज जैसे मदिरा, बीड़ी, सिगरेट आदि।

नाम: मनीष कुमार, आयु: 22 वर्ष, योग्यता: 12वीं, पता: सोनीपत हरियाणा

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	9 अक्टूबर	दिन-मंगलवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-हस्त
पूर्णिमा	24 अक्टूबर	दिन-बुधवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-रेवती
अमावस्या	7 नवम्बर	दिन-बुधवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-स्वाती
पूर्णिमा	23 नवम्बर	दिन-शुक्रवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-कृतिका

संध्या काल

आश्विन मास, शरद ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(26 सितम्बर 2019 से 24 अक्टूबर 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से **(6.15 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 45 मिनट से **(6.45 P.M.)**

कार्तिक- मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(25 अक्टूबर 2018 से 23 नवम्बर 2018)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से **(6.15 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से **(6.15 P.M.)**

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।